उमर का पंछी

वैराग्य भजन

संकलन—सम्पादन

कंचन कुमार

फोन : 25217058

प्रकाशक :
दीप्ति प्रकाशन
208–B पश्चिम विहार एक्सटेंशन
नई दिल्ली –110 063

प्रकाशक एवं वितरक :

दीप्ति प्रकाशन

208–B पश्चिम विहार एक्सटेंशन, नई दिल्ली–63

वितरक

गायत्री सत्संग सभा

पश्चिम विहार, नई दिल्ली

संकलन—सम्पादन—रचनाकार

कंचन कुमार

फोन : 25217058

सेवा : 10/– रुपये मात्र

मुद्रक :

प्रिंट मीडिया

फोन : 27157307, 9818050590

जनहित में प्रसारित एवं वितरित

आत्मउद्‌गार

संसार में मनुष्य चार चीजों से बहुत डरता है दरिद्रता, बीमारी, वृद्धावस्था एवं मृत्यु। जीना और जाना में थोड़ा ही फर्क है लेकिन दुनिया में जीना हमें आ नहीं पाता जाना हम चाहते नहीं। यदि जाना याद रखें तो जीना आने लगता है। जैसे प्रभु की कृपा का कोई भरोसा नहीं होता कभी भी बरसने लगती है उसी तरह मृत्यु का भी कोई भरोसा नहीं होता कभी भी आ जाती है। बच्चे के जन्म के साथ ही मृत्यु साथ खड़ी नजर आती है।

जिस गाड़ी से जाना हमको एकपल में आ जानी हे।
देर नहीं है बिस्तर बांधों सीटी उपदेश सुनाती है।।
इक उतरी आन सवारी है इक चलने की तैयारी है।
दुनिया एक अजब स्टेशन है जहाँ रेल चले दिन राती है।।

चीन के एक दर्शनिक ने चिंतन दिया कि हम ये न समझें कि मर रहे हैं हम ये समझें कि हम नया जन्म ले रहे हैं।

सभी संग्रहों का अन्त विनाश है। उन्नतियों का अन्त पतन है, संभोग का अन्त विभोग और जीवन का अन्त मृत्यु है। जैसे पके फल का गिरना निश्चित है उसी तरह उत्पन्न हुए जीव का मरना भी निश्चित है। मृत्यु जीवन का शाश्वत सत्य है जिसे टाला नहीं जा सकता है, हाँ सुखद अवश्य बनाया जा सकता है।

प्रस्तुत भजन पुस्तक "उमर का पंछी" का मूल उद्देश्य इसी सत्य को आत्मसात कराना है। मंजिल के विषय में अवगत कराना है। जिसे यात्री को अपनी मंजिल का ज्ञान होता है उसका सफर आसान होता है। मृत्यु की अनिवार्यता के विषय में बताना है। मृत्यु को याद करने से विनम्रता का भाव जागृत होता है। परमात्मा से प्रीती होती है एवं अहंकार तिरीहित हो जाता है। मृत्यु को जानने का छोटा सा प्रयास।

इंसान को इश्क का सलीका नहीं आता।
जीना तो बड़ी चीज़ है मरना नहीं आता।।

विनीत : कंचन कुमार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान प्रभु तुम सर्वान्तर्यामी हो। हे सर्वेश्वर, सर्व व्यापक प्रभु तुम अनादिकाल से, अनन्तकाल से संसार पर अपने उपकारों की वर्षा करते हो। हम जानते हैं कि मेघों की ओट में तुम ही मधुर हास्य करते हो। अरूण किरणों में हमने तुम्हारे चरणों को स्पर्श किया है। झरनों, नदियों, जलप्रपातों, जलधारा की कल कल में तुम्हारा ही स्वर है। हे प्रभो, तुम ही विश्व के कण कण में व्याप्त हो। तुम्हारा प्रताप ही वन, पर्वत आकाश, सागर, सूर्य, अग्नि, जल पृथ्वी के विविध रूपों में व्याप्त है। सावन भादों की जलधारा, कंपन करते पत्तों में तुम्हारा ही गीत है। चंचल सुवासित पवन में, नदी की तरंगों पर तुम ही नृत्य करते हो। सावन के बादलों में तुम्हारा ही उन्माद है।

हे जगदीश्वर, हम जानते है तुम्हारा प्रेम ही पत्ते–पत्ते पर स्वर्णाभा बनकर चमक रहा है। तुम्हारे प्रेम से ही अलसाए मेघ आकाश में झूम रहे हैं। तुम ही चुपके से नीरव रात्री में चले जाते हो और प्रभात की स्वर्णबेला में चले आते हो। पक्षियों, जीव जन्तु, एवं जलचर चौपायों में तुम्हारा ही गुन्जन सुनाई देता है। प्राणी मात्र की आकांक्षाओं कामनाओं को तुम ही प्रतिपल पूर्ण करते हो। तुम्हारी छाया में ही परम तृप्ति है।

हे पावन–प्रभो, तुम ही आषाढ़ की संध्या में बरसात की जलधारा, जलकण में, तुम ही बसन्त शिशिर के द्वार खोलते हो। प्रकृति की अनुभूति में तुम्हारा ही गीत है। तुम्हारा प्रकाश वृक्षों के पत्तों पर नृत्य कर ह्दय को उल्लास से भरता है। तुम्हारा प्रकाश ही पक्षियों को कलरव प्रदान करता है, ह्दय को दिव्य आनन्द से भरता है।

हे जगत पिता, जहां तक दृष्टि जाती है तुम्हारी सृष्टि में मंगल ही मंगल दिखाई देता है। तुम न जाने कहां से धरती पर प्रकाश पराग बिखेरते हो। समुद्र में अनमोल

हीरे, मोती, रत्न, पन्नों के खजाने तुमने ही भरे हैं। हम नहीं जानते कि कौन से राग पर नन्दन वन के यौवन का मद जाग उठता है। आम्र–मंजरी की सुगन्ध में, नये पल्लवों के राग पर, चन्द्रकिरण की सुधा से भीगे आकाश में, अश्रुओं के आनन्द भरे स्पर्श में कौन सी वस्तु है उससे वायु पुलकित हो उठती है।

हे प्रभो, हमारी ह्दय रूपी वीणा की तारों में तुम्हारा ही स्पन्दन है। लेकन हम युगों–युगों से आपको नहीं देख पाते हैं। हे नाथ, तुम ऐसा कर दो कि हम तुम्हारा प्रेम पा सके। ऐसी कृपा करो कि हम अपना जीवन तुम्हारी भक्ति, पूजा, सिमरन एवं संसार के प्राणीमात्र की सेवा में लगा सकें।

जगतपिता परमेश्वर, हममे सच्ची श्रद्धा हो। तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठ कर अपनी सभी प्रकार की आसुरी प्रवृतियों पर विजय पाने वाले बने। हे परमेश्वर, मन को मैला करने वाली भावनाओं, स्वार्थ, संकीर्णताओं, काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष, ईर्ष्या आदि कुटिल भावनाओं को हम दूर करें।

प्रभो, अपने गीतों, भजनों के पंख से हम तुम्हारे चरणों का स्पर्श करना चाहते हैं। हे प्रभो कृपा करो, मानसरोवर की ओर जाने वाले हंस जिस तरह दिन रात रूके बिना उड़ान भरते रहते हैं उसी तरह हम भी जीवन पथ एवं महा मृत्यु के पथ पर बढ़ते रहे। हे जगदीश्वर, हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो तथा हम विद्या एवं ज्ञान से पूर्ण बने।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

भजन

1. प्रार्थना सुमन 3
2. मुद्रक विवरण 4
3. आपकी प्रेरणा से 5
4. आत्म उद्गार 6
5. प्रार्थना 8
6. भजन सूची 10
7. ईश्वर स्तुति 13
8. परम पिता से प्रीत 14
9. सत्संग वाली नगरी 15
10. सांचा प्रभु का नाम 16
11. तूझे फूलों में देखूं 17
12. क्यों दूर है इस भक्ति से 18
13. हम आये शरण तुम्हारी 19
14. एक याद तुम्हारी याद रहे 20
15. मुझे है काम ईश्वर से 21
16. मत खोलो प्रभु जी मेरा खाता 22
17. तृष्णा न जाये मन से 23
18. छुक–छुक रेल चली 24
19. उद्धार करो भगवान 25
20. दुख भी मुझे प्यारे हैं 26
21. धीरे–धीरे मोड़ इस मन को 27
22. तेरे चरणों में 28
23. नमस्कार–नमस्कार 29
24. नमस्कार भगवान तुम्हें 30
25. हर पल में हो 31
26. प्यारा प्यारा नाम प्रभु का 32
27. कोई कछु कहे मन लागा 33
28. सुन नाथ अरज अब मोरी 34
29. जाग उठा मैं 35
30. नदी किनारे 36
31. सेवक हैं हम तुम्हारे 37
32. डूबतों को बचा लेने 38
33. तुम बिन हमारा कौन 39
34. भोर भई उठ जाग मन 40
35. पानी में मीन प्यासी 41
36. नाम प्रभु का लिया करो 42
37. प्रभु तेरा ओउम् नाम 43
38. करते हैं तेरा गुणगान 44
39. उठ नाम सिमर 45
40. सारे जहाँ के वाली 46
41. स्वर्ग नरक है इस धरती पर 47
42. प्रेम की अगन हो 48
43. आनन्द स्त्रोत बह रहा 49
44. तेरा रब नहीं बसदा दूर 50
45. कुछ न बिगड़ेगा तेरा 51
46. जागो रे दौलत के 52
47. तू ही एक सहारा 53
48. उस प्रभु की शरण आओ रे 54
49. राम नाम अति मीठा 55
50. मंदिर है भगवन का 56
51. जो भजे हरि तेरो नाम 57
52. मेरे प्रभु तुम बिन 57
53. सदियों से जीवन भटकता 58
54. जिस आदमी का 59
55. मन का दीया तो 60
56. मानव तू अगर चाहे 61
57. नाम सुमिर ले 62
58. जगत में चिन्ता 63
59. तेरी मेहरबानी का 64
60. एक तेरी दया का 65
61. जलायें दीप कुछ ऐसे 66
62. तेरी रहमतों का 67

पं० श्री कंचन कुमार जी
(एक परिचय)

भक्ति, विवेक, वैराग्य, चिन्तन एवं प्रार्थना की तल्लीनता में गाए भजन तन को स्वस्थता, मन को मधुरता एवं बुद्धि को दिव्यता प्रदान करते हैं। श्री कंचन कुमार द्वारा गाए भजनों ने भारत भर में हजारों व्यक्तियों के मानस में भक्ति रस का संचार किया है। देश के हर कोने में आपने भजन–सत्संग से हजारों भक्तों को प्रभावित किया है।

— आप 10 वर्ष से धर्म प्रचार कर रहे हैं। आपकी प्रारंभिक शिाा स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा स्थापित संस्था एवं डीएवी विद्यालय में।
— आपके भजन आकाशवाणी दूरदर्शन से समय–समय पर प्रसारित होते रहे हैं।
— आस्था चैनल पर आपके भजन कार्यक्रम प्रसारित।
— आपके भजनों के 10 कैसेट्स, 6 सी.डी. एवम 1 वीसीडी एवम् 4 संकलित भजन पुस्तकें प्रकाश्तिा हो चुकी हैं।
— लगभग 3 वर्षो तक आप आचार्य सुधांसु जी महाराज के सान्निध्य में भजन कार्यक्रम प्रस्तुत करते रहे हैं।
— वर्तमान में आप स्वामी रामदेव जी के सानिन्ध्य में योग शिविरों में व आस्था चैनल द्वारा भजनों के माध्यम से धर्म प्रचार कर रहे हैं।
— विदेशों में नेपाल, थाईलैंड एवं सिंगापुर में प्रचार कार्य हेतु शीघ्र भ्रमण की संभावना।

निवेदक : गायत्री सत्संग सभा

नइयो जिन्दड़ी दा

नइयो जिन्दड़ी दा कोई विसा, नींवा होके चल बन्देया।
नीविंया नू रब मिलदा, नीवां होके चल बन्देया।।

तज अभिमान छड़ माया दे गुमान नूं।
झूठां अभिमान नइयों भावे भगवान नूं।
सोच के कदम बढ़ा, नीवां हो के चल बन्देया।।

माया दे गुमान विच, चंगे चंगे टुट गए।
भरके तिजोरियां नू, सारे इत्थे सुट गए।
कख वी ते नाल न गया, नींवा हो के चल बन्देया।।

धीयां पुत्त भाई बन्धु, प्यारे पये दिखान्दे ने।
चलके मसाणा तक, झट मुड़ आन्दे ने।
कोई वी ते नाल न गया, नींवा हो के चल बन्देया।

सेवा उपकार वाली, जिन्दगी गुजार तू।
मैली जिन्दगी दे रंग रूप नू संवार तू।
दुखियों दा दर्द वंडा, नींवा हो के चल बन्देया।।

कमर बांधे हुए चलने को सब यार बैठे हैं।
बहुत आगे गए बाकी जो है तैयार बैठे हैं।।

चली चली रे

तर्ज : चली चली रे पतंग मेरी .....

चली चली रे उमर तेरी चली रे।
चली छोड़ संसार बड़ी तेज रफ्तार।
दिन रात पे सवार होके चली रे।।

ये न सोचा दिन चार जवानी।
चार दिन में है खतम कहानी।।
जाए छोड़ घर बार, बेटा बेटी और नार।
जब मौत सिरहाने तेरे खड़ी रे।।

क्यों पापी पाप कमाए।
क्यों विषयों में उमर गवाए।।
जब निकलेंगे प्राण, कोई पूछेगा न आन।
तेरी निकलेगी जान कल्ली कल्ली रे।।

यह जगत मुसाफिर खाना।
हुआ क्यों तू इस पे दिवाना।।
धोखे ठग्गियां कमाए, सब यहीं रह जाए।
फिर आना न होगा इस गली रे।।

अपने मन को समझा ले।
कुछ अपना आप बना ले।।
कर प्रभु से प्यार, तेरा होगा बेड़ा पार।
क्यों फिरता अवारा गली गली रे।।

बिना हरि नाम कोई न सहारा।
ऋषि मुनियों ने है पुकारा।।
न तू जंगलों में जा नहीं तुझ से जुदा।
आज बात मैं सुनाऊं भली भली रे।।

सम्भल कर कदम

सम्भल कर कदम ज़िन्दगी में उठाना,
अजब है ये दुनिया अजब है जमाना।
भक्तों गजल को समझो न गाना,
अजब है ये दुनिया अजब है ज़माना।।

ये मगरूर को सर झुकाती है दुनिया,
ये मजबूर पर मुस्कराती है दुनिया।
सिर्फ चाहती है ये कोई बहाना,
अजब है ये दुनिया अजब है ज़माना।।

ईश्वर अगर राम बन करके आया,
तो इल्जाम उस राम पर भी लगाया।
सिया पर भी था तीर तानो का ताना,
अजब है ये दुनिया , अजब है ज़माना।।

दर्दे जहां जिसने दिल में बसाया,
यहां गर कोई बापू बन कर भी आया।
उसे भी किया गोलियां का निशाना,
अजब है ये दुनिया , अजब है ज़माना।

ये वो बाग है बागवां को जो डांटे,
हर एक पंखुड़ी की जड़ों में है कांटे।
तू नादान खारों से दामन बचाना,
अजब है ये दुनिया , अजब है जमान।

जो मंसूर बनकर खुदा को पुकारे,
उसे भी ये दुनिया पत्थर ही मारे।
ये सीखी है सच्चे को सूली चढ़ाना,
अजब है ये दुनिया अजब है जमाना।।

पंछी रे ये देश बेगाना

पंछी रे ये देश बेगाना।
मेरी मेरी करता फिरता।
सांझ ढले उड़ जाना।।

जिनके संग तू झूले डाली,
होकर मस्त दीवाना।
उड़ जायेगे गीत सुनाकर,
पिंजरा देख पुराना।

माया के ये खेल है सारे,
बन्धु नाती साथी सारे।
काल नगाड़ा जब बजेगा,
सब कुछ होये बेगाना।।

तोड़ के पिंजरा उड़ जा पंछी,
कर ले और ठिकाना।
ऐसा राग सुना रे जिससे,
मिट जाये आना जाना।।

देखा जो मेरा साया ही, मुझसे जुदा मिला।
सोचा था हमने क्या, और हमको क्या मिला।।
शहरों की भीड़ में, यहां किसे अपना कहें।
हमसे गले मिला जो, वही बेवफा मिला।।

उमर का पंछी

उमर का पंछी उड़ता जाता।
क्यों प्राणी प्रभु नाम न गाता रे।।

किसे पता है कल क्या होगा।
पता नहीं किस पल क्या होगा।।
काल चक्र चलता मदमाता।

आज कहे कल नाम जपूंगा।
कल आये फिर कल जप लूंगा।।
बीता कल कभी लौट न आता।

कच्ची सांसो की ये आशा।
कर जाये कब बन्द तमाशा।।
तू मूरख मन क्यूं भरमाता।

माया आ जाए सुख के सामान बदल जाते हैं।
धीरे–धीरे दुनिया में इंसान बदल जाते हैं।।
केवल तिलक लगाने और रोज शीश झुकाने में।
पूजा करते भक्तों के भगवान बदल जाते हैं।।

दाग जो लागा नील का, सौ मन साबुन धोय।
कोटि बार समझाइया, कौआ हंस न होय।।

छोड़ कर संसार

तर्ज : रेशमी सलवार कुर्ता जालीदार .....

छोड़ कर संसार जब तू जाएगा काई न साथी तेरा साथ निभायेगा

गर प्रभु का भजन किया न, सत्संग किया न दो घड़ियां।
यमदूत लगाकर तुझको ले जाएगा हथकड़ियां।
कौन छुड़वाएगा।। कोई न साथी ....

क्यों करता मेरा मेरा, ये दुनिया रैन बसेरा।
यहां कोई नहीं है तेरा, है चन्द दिनों का डेरा।
हंस उड़ जाएगा।। कोई न साथी ....

इस पेट भर की खातिर तू पाप कमाता निशदिन।
शमशान में लकड़ी रखकर तुझे आग लगेगी एक दिन।
खाक हो जाएगा।। कोई न साथी ....

सत्संग की है ये गंगा, तू इसमें लगाले गोता।
वरना इस दुनिया से जाएगा एक दिन रोता।।
बाद पछताएगा।। कोई न साथी ....

अब प्रभु चरणों में निशदिन तू प्रीत लगा ले बन्दे।
कट जाएंगे तेरे ये सब जनम मरण के फन्दे।।
पार हो जाएगा।। कोई न साथी ....

मैना ने 'मैं' 'ना' कही, मोल भयो दस बीस।
बकरी ने 'मैं'—'मैं' करी, कबीर कटायो सीस।।

जागो रे दौलत के दीवानो

जागो रे, ए दौलत के दीवानो।
जागो रे ए दौलत के दीवानो।।

दौलत लड़का दे सकती पर, पुत्र दिलाना मुश्किल है।
दौलत नौकर दे सकती पर, सेवक पाना मुश्किल है।।
दौलत औरत दे सकती पर, पत्नी नहीं दिला सकती।
दौलत बिस्तर दे सकती, पर नींद कभी न ला सकती।।

ऐनक मिलती दौलत से, पर नैन कहां से लाओगे।
रोटी मिलती दौलत से, पर भूख कहां से पाओगे।
दौलत से बादाम मिलेंगे, पर ताकत न आएगी।
सुख दिलाएगी ये दौलत पर शांति नहीं दिलाएगी।

कुछ पैसे में जाकर सज्जनों जहर अभी ले आओगे।
बीस करोड़ में भी अमृत की बूंद एक न पाओगे।
दौलत गीता दे सकती है, पर ज्ञान नहीं दे सकती है।
दौलत मंदिर दे सकती, भगवान नहीं दे सकती है।

धन से सुर्खी पाउडर ले लो, सुन्दरता न पाओगे।
बाजा ले लो दौलत से पर, कंठ कहां से लाओगे।।
लाख सितारे चमके रवि बिन दूर अंधेरा न होगा।
आत्म ज्ञान के बिना सुखों का कभी सवेरा न होगा।।

यह न कभी विचारा

तर्ज : बोल राधा बोल संगम ....

यह न कभी विचारा, कि मानस जन्म दुबारा।
तुमको क्या मालूम कि, पाएगा या नहीं।।
ये चलता श्वास फुवारा, और दूजा श्वास तुम्हारा।
तुमको क्या मालूम, फिर आएगा या नहीं।।

जितने लम्बे दावे तेरे, उमर भी उतनी छोटी है।
लाखों मन है जमा ज़खीरे, किस्मत में दो रोटी है।
उस पर भी कुछ नहीं चारा, जब काल का हुआ इशारा।
टूटा हुआ गिरास भी खाएगा या नहीं।।

तेरी आंख में दर्द हो तो, हम दर्द नैन बरसाते हैं।
आँख की पुतली फिरते ही सब के मुंह भी फिर जाते हैं।
इतना है साथ तुम्हारा कोई रिश्तेदार प्यारा।
फिर गंगा जी तक फूल भी ले जाएगा या नहीं।।

मेहनत और सच्चाई से, बेशक कुटुम्ब को पालो तुम।
गुरू को पाना तो पाव दूध में, पाव न पानी डालो तुम।।
कहना है फर्ज हमारा और सुनना फर्ज तुम्हारा।
नत्था सिंह मालूम क्या निभायेगा या नहीं।।

यारों सफर का कुछ सामान तो करो।
जाना कहाँ है तुमको कुछ ध्यान तो करो।।

मनवा ओ३म् नाम तू गा ले

मनवा ओ३म् नाम तू गा ले।
सुमिरन कर ले परम पिता को।
मूरख अलख जगा ऽऽ ले।।

क्या जाने तू प्रभु की माया।
इस पल धूप तो इस पल छाया।।
अवसर ऐसा फिर न मिलेगा।
जीवन सफल बना ऽऽ ले...।।

क्या देगी दुनिया दस रंगी।
क्यों देंगे ये साथी संगी।
प्रभु नाम रस पी मतवाले।
प्रभु नाम फल खाले।।

तन की क्षण भंगुर नौका पर।
परदेसी आया तू चढ़ कर।।
प्रभु नाम पतवार बना कर।
नौका पार लगा ऽ ले।।

कोई कितना ही बड़ा क्यों न हो, कभी भी अन्धों की तरह उसके पीछे न चलो।
— चाणक्य

किसी दिन देख लेना

किसी दिन देख लेना तुझको ऐसी नींद आएगी।
तू सोया फिर न जागेगा तुझे दुनिया जगाएगी।।

तुझे संसार के खूंटे में जिसने बांध रखा है।
तेरे सोते ही वो ममता की रस्सी टूट जाएगी।।

तेरे घरवाले जिस सूरत से इतना प्यार करते हैं।
तू आंखे फेरेगा तो दुनिया भी मुंह फेर जाएगी।।

जो कहते थे मरेंगे साथ तो थोड़े कदम चल कर।
जो आंखे पे बिठाती थी वही आंखे दिखाएगी।।

जिन्हें समझा है नत्था सिंह तू अपने वो तो लौटेंगे।
तेरी नेकी बदी ही अन्त तेरे साथ जाएगी।।

कबीर ते नर अन्ध है, गुरू को कहते और।
प्रभु रूठे गुरु ठोर है, गुरु रूठे नाहिं ठोर।।

जे दुखिया संसार में, खोवौ तिनका दुक्ख।
दलिद्दर सौंपि मलूक को, लोगन दीजै सुक्ख।।

पूछेंगे जब वो जनाब

पूछेंगे जब वो जनाब क्या फिर जवाब है।
होगा ऽ क्या जी हिसाब क्या फिर जवाब है।।

मरने से पहले तुझे जीना भी आया न।
हरि नाम रस तुझे पीना भी आया न।
पीया है शराब और शवाब क्या फिर जवाब है।।

किसी बर्बाद को क्या आबाद किया तूने।
किसी नाशाद को क्या शाद भी किया तूने।।
खाता जो निकला खराब क्या फिर जवाब है।।

औरों को तू ने बस ज्ञान ही सिखाया है।
और खुद अपने को यूं ही भटकाया है।
बनता रहा है तू नवाब।। क्या फिर जवाब है।।

अब भी सम्भल जा बन्दे खुद में सुधार कर।
प्रभु के बनाए हुए बन्दों से प्यार कर।
सबको ही करता जा आदाब फिर लाजवाब है।।

प्रभु कुम्हार सिष कुम्भ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट।
अन्तर हाथ सहार दे, बाहिर बाहे चोट।।

अरे भोगी

तर्ज : अरे जोगी हम तो लुट गए .....

अरे भोगी, फंसा है तू माया के जाल में।
तेरी ममता ओ तेरी ममता कब कम होगी।।

रेत की टूटी दीवारों सा तेरा ताना बाना।
कुछ दिन करले ऐश ये आखिर, होगा माल बेगाना।।

झूठी दुनियादारी पे ओ बन्दे क्यों इतराए।
लाखों आए लाखो चले गए दुनिया एक सराय।।

मकड़ी जैसा बना के जाला फंस गया उसमें बन्दे।
कुछ तो उसका सुमिरन कर ले छोड़ काम ये गन्दें।।

नशा जवानी धन दौलत का कर ले हेरा फेरी।
इक दिन बन्दे शमशानों में चिता जलेगी तेरी।।

सुमिरन की सुधि यों करो, ज्यों गागर पनिहार।
हालै डोलै सुरति में, कहे कबिर विचार।।

प्रभु नाम को सुमिरता, हंसी कर भान खीज।
उल्टा सुल्टा नीपजै, ज्यों खेतन में बीज।।

ओ भोले पंछी

तर्ज : दिल लूटने वाले .....

ओ भोले पंछी सोच जरा, तेरा असली कहां ठिकाना है।
इस दुनिया की रंग रलियों पे, तू क्यों हो गया दिवाना है।।

तू इस माया के फूलों पर, क्यों देख कर फूला है।
इस चमन की मस्त बहारों में खुद अपने आप को भूला है।।
जो फूल खिले है आज यहां कल उनको भी मुरझाना है।।

ये जीवन एक कहानी है, बस दो दिन की जिन्दगानी है।
यहां टिककर कोई रहा ही नहीं, यह दुनिया आनी जानी है।
इस बात को भूलना मत पगले, तुझको भी एक दिन जाना है।

कुछ सोच ले उठ नादान जरा, करले सुमिरन भगवान जरा।
पुण्य पाप की गठरी जो बांधी उस पर भी कर ले ध्यान जरा।
ये वक्त अमोलक जीवन का फिर लौट के हाथ न आना है।

अहंकार मनुष्य को सदा दूर करता है। क्योंकि उसमें अपनी और आकृष्ट करने की चुम्बक शक्ति नहीं होती।
गीता प्रवचन से

तू अभिमानी मत बन सिखाने की चेष्टा मत कर। कुछ सीखने का प्रयत्न कर, निश्चय ही सबसे कुछ न कुछ प्राप्त कर सकेगा। —सन्त बर्नार्ड शा

तुम्हें क्या हो गया है

तर्ज : मिलो न तुम तो हम घबराए ....

पाप कमाएं फिर सुख चाहे, धर्म के पास न जाए,
तुम्हें क्या हो गया है।
खुद ही घर को आग लगाए, खुद ही फिर पछताए,
तुम्हें क्या हो गया है।।

हो भोले प्राणियां झूठी है माया संसार की।
जीवन में तुम क्यों नहीं, भरते सुगन्धी प्रभु प्यार की।
दिल से प्रभु की याद भुलाए, पाप में फंसते जाए।
तुम्हें क्या हो गया है।।

ओ प्यारे बंदेया, रंगा है जीवन मोह रंग में।
पाप ही कमाए तूने, आए कभी न सत्संग में।
बीज बबूल जो बोए तू ने, आम कहां से खाए।
तुम्हें क्या हो गया है।।

मुनिजन तुम से ये कहे, क्यों नहीं जीवन सुधारते।
मौका मिला है क्यों नहीं, दिल से प्रभु को तुम पुकारते।
जानबूझ करके विष खाए, अमृत को ठुकराए।
तुम्हें क्या हो गया है।।

जहां दया तहां धर्म है जहां लोभ तहां पाप।
जहां क्रोध तहां पाप है जहां क्षमा तहां आप।।

दो दिन का जग में मेला

दो दिन का जग में मेला सब, चला चली का खेला।
कोई चला गया कोई जावे कोई गठरी बांध सिधावे।
कोई खड़ा तैयार अकेला रे, कोई खड़ा तैयार अकेला।
ये चला चली का खेला रे खेला रे खेला रे।।

पाप कपट छल माया करके लाख करोड़ कमाया।
संग चले न एक अधेला, संग चले न एक अधेला।
ये चला चली का खेला रे खेला रे खेला रे।।

माता पिता सुत नारी भाई अन्त सहायक नाही।
फिर क्यों भरता पाप का ठेला, फिर क्यों भरता पाप का ठेला।
ये चला चली का खेला रे खेला रे खेला रे।।

ये तो है नश्वर संसारा, भजन तू कर ले ईश का प्यारा।
ब्रह्मान्नद कहे सुन चेला रे, ब्रह्मानन्द कहे सुन चेला रे।
ये चला चली का खेला रे खेला रे खेला रे।।

कहीं चराग कहीं रौशनी है।
बंटी हुई सी हर एक जिन्दगी है।।

जिन्दगी में हजारों का मेला जुड़ेगा।
हंस उड़ेगा यदि तो अकेला उड़ेगा।।

समय बड़ा बलवान रे

समय बड़ा बलवान रे, समय बड़ा बलवान।
इस दिन सबको जाना होगा, निर्धन या धनवान रे।।

है दुर्लभ ये मानव जीवन, बड़ा कठिन पाना मानव तन।
पाकर धन वैभव यौवन तू, मत करना अभिमान रे।।

जिस दिन आया तू धरती पर, काल चला हम जोली बनकर
पता नहीं कब धर बैठेगा, मूर्ख रुत पहचान रे।।

काम बहुत है जीवन थोड़ा, उस पर मन का चंचल घोड़ा।
रुक जा प्राणी गा ले प्रभु का, सुन्दर प्यारा नाम रे।।

जब चलने का पल आयेगा, कोई रोक नहीं पायेगा।
प्रभु चरणों में शरण तिहारी, सोच समझ नादान रे।।

वहां न कबहूं जाईये, जहां न प्रभु का नाम।
दीगम्बर के गाव में, धोबी का क्या काम।।

अब सागर के तरन को, है प्रभु नाम आधार।
सो बिसरायो सहज ही, रे मन मूढ़ गंवार।।

काया एक पिंजरा

तर्ज : इक प्यार का नगमा है....

काया एक पिंजरा है, पंछी सैलानी का।
जिन्दगी और कुछ भी नहीं, बुलबुला है पानी का।।

कुछ पाकर खोना है, कुछ खोकर पाना है।
पाना और खोना ही, जीवन का फसाना है।
श्वासों की प्याली है, ढांचा जिन्दगानी का।।

दुनिया एक मेला है, एक खेल मदारी का।
पलभर में बिछुड़ जाये, वर्षो की तैयारी का।
प्रातः इक बचपन है, दोपहर जवानी का।।

नहीं कोई पराया है, नहीं कोई अपना है।
अपने और पराये का, प्रेमी एक सपना है।
मिल मिल के बिछुड़ता है, रिश्ता हर प्राणी का।।

माला तिलक बनाय के, धर्म विचारा नांहि।
माला बिचारी क्या करे, मैल रहा मन मांहि।।

जो आया है एक दिन

तर्ज : जो वादा किया वो ....

जो आया है इक दिन उसको, जाना पड़ेगा।
परिवार रोके चाहे, संसार रोके फिर भी जाना पड़ेगा।।

देख के मौत को न आंसू भरना।
सुन ले ओ मरने वाले हंस हंस के मरना।
नश्वर है देह तेरी अग्नि में इक दिन इस को जलाना पड़ेगा।

निकम्मा है दुनिया में जीवन अपमान का।
अच्छा है थोड़ा जीना, जीवन हो शान का।
भव से जो पार होना, वेदानुसार जीवन बनाना पड़ेगा।

मकड़ी की भाति तूने जाल बिछाया।
विषयों विकारों में है जीवन गंवाया।
प्रभु से किया था जो वायदा गर्भ में उसको, निभाना पड़ेगा।।

दुनियां है अजब सराये आये और कोई जाये।
साथी शमशान तक हैं, अपने और क्या पराये।
नन्दलाल सुन ले, कर्मो का फल तुझको भी पाना पड़ेगा।।

यह दुनिया के मेले, हरगिज न कम होंगे।
अफसोस दुनियां में, एक दिन हम न होंगे।।

मौत की शहजादी

सजधज कर जब मौत की शहज़ादी आएगी।
न सोना काम आएगा न चांदी आएगी।।

छोटा सा है तू बड़े अरमान है तेरे।
मिट्टी का तू सोने के, सामान है तेरे।।
मिट्टी काया मिट्टी में, जिस दिन समाएगी।
न सोना काम आएगा न चांदी आएगी।।

पंछी है तू पर ये पिंजरा छोड़ के उड़ जा।
माया महल के सारे बन्धन तोड़ के उड़ जा।।
मौत दिल की धडकन में जब गुनगुनाएगी।
न सोना काम आएगा न चांदी आएगी।।

धन दौलत से खाली होगे एक दिन तेरे हाथ।
अन्त समय भगवान भजन जाएगा तेरे साथ।
उस दिन श्री सतगुरू की वाणी याद आएगी।।
न सोना काम आएगा न चांदी आएगी।।

अच्छे किए हैं कर्म जो तूने पाया मानव तन।
पाप में क्यों अब डूबा है यह पापी चंचल मन।
पाप की नैया ये तुझको जिस दिन डुबाएगी।।
न सोना काम आएगा न चांदी आएगी।।

होश आता है

होश आता है बशर को, उम्र ढल जाने के बाद।
वक्त की कीमत समझता, वक्त ढल जाने के बाद।।

आने से पहले मुसाफिर, राहो में उलझा रहा।
लौटता मायूस होकर, गाड़ी निकल जाने के बाद।।

जब बदलने का समय था तब तो तू बदला नहीं।
अब तो बदला क्या हुआ सब कुछ बदल जाने के बाद।।

क्यों खड़ा अफसोस करता कल की बातों पर जनाब।
लौट कर आता नहीं है बीता पल जाने के बाद।।

शरीक़े जुर्म यहां हर किसी के चेहरे है।
यहां इसका इंसाफ किससे कराया जाए?
या तो इंसान को इंसान बनाया जाए।
या कोई और नया भगवान बनाया जाए।।

न धुप रैणी न छां बन्दया

न धुप रैणी न छां बन्दया न प्यो रैणा न मां बन्दया।
हर शय ने आखिर मुक जाणा इक रैणा रब दा ना बन्दया।।

तू मुंह तो रब रब कर दा ए कदी तुर अन्दरों वी कडया कर।
जो बानी दे विच लिखेया तू अमल उदे वी करया कर।
कुल तीन हथ तेरी थाँ बन्दया।। ना धुप रैणी न.....

जो फुल सवेरे खिड़दे ने सब शामाँ नू मुरझा जान्दे।
ऐ दावे वादे सब बन्दया दो पल विच होश उड़ा जान्दे।
उड़िकदयां कब्राँ बन्दया।। न धुप रैणी न ....

आज मिट्टी पैरा थल्ले है कल मिट्टी हेठां तू होणा।
जे पता है सब ने मिट जाना फिर कादे लई रोना धोना।
तू मैं नूं मार मुका बन्देया। न धुप रैणी न ....

शमशेर जे मंजिल पौणी है तां लग जा गुरां दे तू चरणीं।
तेरे कष्ट रोग सब मुक्कणगे मुक जाउगी सब करनी भरनी।
तू जप ले प्रभु दा नॉ बन्देया।। न धुप रैणी न ....

सितारों ने कहा सारा गगन बदला है।
बुलबुलों ने कहा सारा चमन बदला है।।
जाते हुए फकीर ने हमसे तो इतना कहा।
मुर्दा तो वही है बस सिर्फ कफन बदला है।

अच्छा चोला दिया

अच्छा चोला दिया तुझको उस करतार ने।
नाम न जपा आकर तूने संसार में।।

बचपन सवेरा और दोपहर जवानी है।
सांझ बुढ़ापा फिर खत्म कहानी है।।
खाया पिया दौड़ा भागा तू बेकार में।
नाम न जपा आकर तूने संसार मे।।

नाम न जपा तूने प्रभु गुण गाया न।
प्रभु भक्ति में कभी मन को लगाया न।।
कैसे मूंह दिखाएगा तू उस दरबार में।
नाम न जपा आकर तूने संसार में।।

—रचना कंचन कुमार

तुम्हारा काम है प्रभु का नाम लेने का।
प्रभु काम है गिरतों को थाम लेने का।।

ज़र को ही ज़िन्दगी का सहारा समझ लिया।
कश्ती ने भंवर को ही किनारा समझ लिया।।
है याद जिसको ईश्वर और मौत नत्था सिंह।
जीवन का उसने राज ही सारा समझ लिया।।

कर ले जतन हजार

कर ले जतन हजार पंछी उड़ जाना।
जीवन के दिन चार पंछी उड़ जाना।।

ये पंछी है बड़ा अनोखा।
एक दिन दे जरूरी धोखा।
क्यों सोया चादर तान।। पंछी ......

इस पंछी का नहीं ठिकाना।
इसने निकल जरूरी जाना।
रो रो हो हैरान।। पंछी ......

जब पिंजरे से उड़ कर जाए।
पकड़ो कितना हाथ न आए।
लम्बी भरे उड़ान।। पंछी ......

योगी जनो ने जोर लगाया।
नहीं किसी ने काबू पाया।
हो गया सब वीरान। पंछी ......

तू अगर खुद को खो नहीं सकता।
तो समझ उसका दीदार हो नहीं सकता।
जिन्दगी भर तू यूं ही धूल चाटेगा।
जवानी में जो गर कुछ बो नहीं सकता।।

जनम देने वाले

जनम देने वाले इतना तो बोल रे।
कैसे चुकाऊँ इन सांसो का मोल रे।

तेरी कृपा से मिला, मुझको ये ऽऽ तन।
जिसमें बसाऊँ तुझे, दिया है वो ऽऽ मन।
तन की तो खोली आंखे मन की भी खोल रे।।

मैने किया न कोई, दान धरम।
छल से भरे हैं मेरे, सारे करम।
नाम भुलाया मैंने तेरा अनमोल रे।।

मद में हमेशा रहा, मैं सदा चूर चूर।
मंदिरों से भगवन से, मैं रहा दूर दूर।
किसी से न बोले मैंने, दो मीठे बोल रे कैसे..।।

बन्दा है वो क्या बन्दा

बन्दा है वो क्या बन्दा गर बन्दगी न की है।
मय के नशे में रहना क्या ये ही जिन्दगी है।।

उस मय से रहा मतलब नफरत जो करे पैदा।
सजदा करेगी दुनिया गर नाम की मय पी है।।

वो नजर है नजर कैसी नजरों से जो गिराए।
कीमत है उस नजर की जो उसकी नजर की है।

बैरागी बन के अब भी कुछ नेक काम कर ले।
कुछ भी पता नहीं कि कब वक्त आखरी है।।

शुभ कर्म न कमाया

तर्ज : चूड़ी मजा न देगी ....

शुभ कर्म ना कमाया, प्रभु नाम भी न गाया।
कुछ तो समझ ले प्राणी, दुनिया में क्यों है आया।।

दुनिया है एक झमेला, है चन्द रोज मेला।
आया था खाली हाथों, और जाएगा अकेला।
क्या होगा कल न सोचा, जीवन है धन पराया।।

ये जग है भूल भूलैया अब भी समझ ले भैया।
कुछ बन्दगी तू करले, तर जाए तेरी नैया।
दर दर रहा भटकता, फिर भी समझ न पाया।।

कोई नहीं है तेरा, न करना मेरा मेरा।
शुभ कर्म कर ले प्राणी, छंट जाएगा अंधेरा।
खाया पिया तू सोया, विषयों में मन लगाया।।

—रचना कंचन कुमार

चरागों के बदले मकां जल रहे हैं।
गया है जमाना नई रौशनी में।।

नाभि बसै कस्तूरिया, मृग निज सुधि बिसराय।
भ्रम तो तरू वैली सकल, ढूंढे बन—बन जाइ।।

बीती रे उमरिया

तर्ज : कौन दिशा में लेके ....

बातों ही बातें में बीती रे उमरिया।
तुझे होश न आया यूं ही वक्त गंवाया।
किया कभी न भजन, ओ मेरे मन।।

बाल अवस्था यू ही गंवायी, की बहुत नादानी।
होश रहा तुझे कुछ भी नहीं जो आई तुझ पे जवानी।
वृद्ध भयो तब सूझे कछु न, यूं ही गया यौवन बचपन।।

मानव तन मुश्किल से मिला है, सबने यही बताया।
पर तूने अनमोल खजाना कौड़ी समझ लुटाया।
जान बुझ कर अपने हाथों, चू न गंवा तू अपना धन।।

मानव तन है जिसने दिया तुझे उसको काहे भुलाया।
घट घट में जो रमा हुआ है, वो मन में क्यों न बसाया।
मन मन्दिर में प्रियतम को, बिठलाकर तू मूंद नयन।।

जब आई तेरी जवानी तब तुझे होश रहा नहीं।
जब होश आया तो जवानी निकल गई।।

मैं भटका हुआ जीव

तर्ज : आवाज देकर ....

मैं भटका हुआ जीव हूं तेरी राह से।
मेरे रहनुमा मुझ को रस्ता दिखा दे।।

कुपथ पर चला खाई जग की ठोकर।
कहुं क्या जुबां से गुजरी जो मुझ पर।
उपाय सुधरने का भगवन सुझा दे।।

किया कोई सत्कर्म न जिन्दगी में।
लगाया न मन चित कभी बन्दगी में।
मैं जैसा हूं बन्दा तुम्हारा पनाह दे।।

पड़े न चौरासी का चक्कर गुजरना।
बचाना प्रभु तुम दया मुझ पे करना।
भव से उतरने का जरिया सुझा दे।।

मेरे जैसे लाखों गुनाहगार तारे।
यह दासा भी दाता आया तेरे द्वारे।
रहमत से अपनी मायूसी मिटा दे।।

आने का दिन एक है जाने का दिन एक।
इन दो दिनों के बीच में काम करो कोई नेक।।

नाम प्रभु का जप ले बन्दे

नाम प्रभु का जप ले बन्दे फिर पीछे पछताएगा।

तू कहता है मेरी काया काया का गुमान क्या।
चांद सा सुन्दर ये तन तेरा मिट्टी में मिल जाएगा।।

वहां से तू क्या लाया बन्दे यहां से क्या ले जाएगा।
मुट्ठी बांध के आया बन्दे हाथ पसारे जाएगा।।

बालापन में खेला खाया आयी जवानी मस्त रहा।
बुढ़ापन में रोग सताया पड़ा खाट पछिताएगा।।

तेरे चरणों में

तेरे चरणों में जिन्दगी है मेरी।
मैं हूं बन्दा, तू बन्दगी है मेरी।।

तुझ तलक मैं पहुंच नहीं पाता।
चलते रहना ही जिन्दगी है मेरी।।

तू मिले तो करार मिल जाए।
ऐसी तकदीर तो नहीं है मेरी।।

तेरी यादों में खो गया है अमर।
दर हकीकत ये बेखुदी है मेरी।।

उमर धीरे धीरे

चली जा रही है उमर धीरे धीरे।
ये पल पल में आठों पहर धीरे धीरे।।

बचपन भी बीता जवानी भी जाए।
बुढ़ापे का होगा असर धीरे धीरे।।

तेरे हाथ पैरों में दम न रहेगा।
झुकेगी तुम्हारी कमर धीरे धीरे।।

खतम होगे अरमां कभी भी न दिल के।
खतम होगा जीवन सफर धीरे धीरे।।

बुराइयों को दूर कर कभी इन्द्र अपने।
तू कर ले प्रभु का भजन धीरे धीरे।।

नाम प्रभु का जपते रहो, जब तक घट में प्राण।
कभी तो दीन दयाल के, भनग पड़ेगी कान।।

जग में कौन है तेरा

जग में कौन है तेरा।
चार दिनों के साथी सारे।
दुनिया रैन बसेरा।।

धन वालों के बंधु नाती, निर्धन फिरे अकेला।
मतलब के है सब संसारी, किसको कहता मेरा।।

माया ठगती तुझको मूरख, निस दिन आस बंधावे।
आंखे रखने वाले मूरख, कौन मीत है तेरा।।

यह जग जान मुसाफिर खाना, कोई दम का आनाजाना।
क्यों सोया है लम्बी ताने, अब तो हुआ सवेरा।।

नाम प्रभु की जोत से मुरख, मन का दीप जला ले।
जिस ज्योति के कारण जग से, मिटता घोर अंधेरा।।

फूल चुनने आए थे बागे हयात में।
कांटों में अपना दामन उलझा के रह गए।।

उम्र तेरी चली जाए

तर्ज : नही ये हो नही सकता ......

तू जपता क्यों नहीं प्रभु को, यूं ऐसे मन क्यों भरमाए।
कहीं ऐसा न हो आखिर, तू तलियां मल के पछताए।।
तेरे जागने से पहले, तेरी उम्र चली जाए।
उम्र तेरी चली जाए, उम्र तेरी चली जाए।।

ये दुनिया की हंसी रस्मे, तेरे कोई काम न आए।
गुमां जिसका तुझे ए मन, वो पंछी पल में उड़ जाए।
कोई सुने न फिर तेरी सदा, न तेरी सदा।।
यही तो सोच ऐ प्राणी, कोई आए कोई जाए।
कहीं ऐसा न हो आखिर तू तलियां मल के पछताए।
तेरे जागने से पहले, तेरी उम्र चली जाए।।

ये मोह माया के बन्धन से चलो आगे निकल आए।
तू मिट्टी का खिलौना है, ये अपने मन को समझाए।
काहे करे अभिमान सदा अभिमान सदा।।
कि कल परसों से चक्कर में कहीं बरसों निकल जाए।
कहीं ऐसा न हो आखिर तू तलियां मल के पछताए।
तेरे जागने से पहले तेरी उम्र चली जाए।।

रचना : कंचन कुमार

सूझता क्यों नही एक रोज वह भी आएगा।
मौत का झंडा कभी सिर पर तेरे लहराएगा।।

दिल न लगाना

तर्ज : परदेसियों से न अंखियां मिलाना ....

इस दुनिया में न दिल को लगाना।
इस दुनिया से है एक दिन जाना।।

इस दुनिया में, फूले फलेंगे।
पांव से नंगे, हाथ खाली चलेंगे।
पता तब पड़े जब आया परवाना।।

कूड़ा ये जग तेरे काम न आवे।
मन फरेबी तुझे ऐसा भरमाये।
मन जादूगर से है बचकर जाना।।

इस दुनिया के जो रिश्ते नाते।
विपत पड़ी तो सब छोड़ ही जाते।
कहें सतनाम जी शाह मस्ताना।।

और चल फिर ले तन तन के ए बांके जवां।
चार दिन के बाद फिर टेढ़ी कमर हो जाएगी।।

मस्जिद में उसे ढूंढा मन्दिर में उसे ढूंढा।
इकबाल मगर दिल के अन्दर कभी न ढूंढा।।

बाजी हार के जीवन की

तर्ज : लव तुझे लव मैं करता हूं ...

बाजी हार के जीवन की न जीत सका तृष्णा मन की।
मन की तारों पर नाचा, सूख गई नस नस तन की।।

शुरू से है ये ताना बाना, आज है आए कल जाना।
पाप कमा दौलत जोड़ी, जब जाए तो खाली जाना।।
दौलत से, दुनिया में, क्या खोया, क्या पाया।
सोचो तो, क्यों आया, क्यों आया।
दौलत से जब ललचाया, आई झंकार छनाछन की।।

दुनिया छोड़ के जब जाएगा, नाम का धन ही काम आएगा।
कर्म कमाए जो जीवन में, संग तेरे वो ही जाएगा।।
दुनिया के, सारे गम, सह लेना, न कहना।
कुछ भी तुम, न कहना, न कहना।
मन प्रभु चरणों में जब लागे, तब भागे तृष्णा मन की।।

—कंचन कुमार

इसे जीने का गर्व क्यों कहा देह की प्रीत।
बात कहते ढह जाते है, ज्यों बालू की भीत।।

फुरसत के वक्त भी न सिमरन का वक्त निकाला।
उस वक्त वक्त मांगा जब वक्त तंग आया।।

क्या भरोसा है

क्या भरोसा है इस जिन्दगी का।
साथ देती नहीं ये किसी का।।

श्वास रूक जाएगी चलते चलते।
शमां बुझ जाएगी जलते जलते।।
नाम रह जाएगा आदमी का।
साथ देती नहीं है किसी का।।

जिन्दगी की हकीकत पुरानी।
चलके रूकना है इसकी कहानी।
फर्ज पूरा करो बन्दगी का।
साथ देती नहीं ये किसी का।।

ध्यान हमेशा हरि का लगाना।
किसी दुखिया की बिगड़ी बनाना।
जिन्दगी नाम है बस इसी का।
साथ देती नहीं ये किसी का।।

जाति हमारी आतमा, नाम हमारा राम।
पांच तत्व का पूतरा, आई किया विश्राम।।

माटी का चोला तेरा

तर्ज : फूलों सा चेहरा तेरा ....

माटी का चोला तेरा भूला क्यों नादान है।
रंग पे इतराए क्यों, रूप पे इतराए तू,
दो दिन का मेहमान है।।

हिरनी के जैसे भागा फिरा तू, बचपन बिताया इसी हाल में।
खाया पिया तो बीती जवानी, आया बुढ़ापा कुछ ही साल में।।
नाम न पुकारा, किया बस गुजारा।
वो तो है सहारा, तू जान पगले।
मिलेगा किनारा, चमकेगा सितारा।
होगा जब इशारा, तू मान पगले।
नाम ही है तारन हारा, भक्ति से अन्जान है।। रंग पे..

इतना दिया है दाता ने तुझको जितनी तेरी औकात नहीं।
ये तो दया है दाता की तुझ पर, वर्ना तो तुझमें कोई बात नही।
दर जो उसके आता, खाली न वो जाता।
कुछ न कुछ वो पाता, तू जान पगले।
वो ही सबका दाता बिगड़ी वो बनाता।
सबका है विधाता, तू मान पगले।
वो ही है पालन हारा, भूला क्यों इन्सान है।। रंग पे..

रचना : कंचन कुमार

अपनी ही करनी का फल है आपकी रूसवाईयां।
आपके पीछे चलेंगी, आपकी परछाईयां।।

आरती

ओ3म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे।।

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।।

मात पिता तुम मेरे शरण गहूं मैं जिसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं किसकी।।

तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी।।

तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता।।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमति।।

दीनबंधु दुःख हर्त्ता, तुम रक्षक मेंरे।
करूणा हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा मैं तेरे।।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।

ओ3म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे

चदरिया झीनी रे झीनी

चदरिया झीनी रे झीनी
झीनी रे झीनी झीनी।
राम नाम रस भीनी चदरिया।।

अष्ट कमल का चरखा बनाया।
पांच तत्व की पूनी।।
नौ दस मास बुनन को लागे।
मूरख मैली कीनी चदरिया।।

जब मोरी चादर बन घर आई।
रंगरेज को दीनी।।
ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने।
लालो लाल कर दीनी चदरिया।।

चादर औढ़ शंका मत करियो।
ये दो दिन तुम्हें दीनी।।
मूरख लोग भेद नहीं जाने।
दिन दिन मैली कीनी चदरिया।।

ध्रुव प्रह्लाद सुदामा ने ओढ़ी।
शुकदेव ने निर्मल कीनी।।
दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी।
ज्यूं की त्यूं धर दीनी चदरिया।।

छुक–छुक रेल चली

छुक–छुक, छुक–छुक रेल चली है जीवन की।
हंसना, रोना, जागना, सोना, खोना, पाना, सुख, दुख।

छोटी–छोटी सी बातों से मोटी–मोटी खबरों तक।
ये गाड़ी ले जाएगी हमको, मां की गोद से कबरों तक।
सब चिल्लाते रह जाएंगे रूक रूक रूक रूक रूक।।

सामां बांध के रखों लेकिन, चोरों से होशियार रहो।
जाने कब चलना पड़ जाए चलने को तैयार रहो।
जाने कब सीटी बज जाए, सिगनल जाए झुक।।

पाप और पुण्य की गठरी बांधे सत्य नगर को जाना है।
जीवन नगरी छोड़ के हमको दूर सफर पे जाना है।
ये भी सोच ले हमने क्या क्या माल किया है बुक।।

रात और दिन इस रेल के डिब्बे, और सांसों का इंजन है।
उम्र है इस गाड़ी के पहिये, और चिता स्टेशन है।
जैसे दो पटरी हो ऐसे, साथ चले सुख–दुख।।

सांस एक रोज़ हवाओं में बिखर जायेगी।
तेरी मिट्टी कभी मिट्टी में उतर जायेगी।।
किसको मालूम सफर खत्म कहां होता है।
जाने किस मोड़ पे ये रेल ठहर जायेगी।।

तृष्णा न जाए मन से

तृष्णा न जाए मन से, भक्ति न आए मन में।
जतन करूं मैं हज़ार, कैसे लगेगी नैया पार।।

इक पल माया, साथ न छोड़े।
जिधर जिधर चाहे मुझे मोड़े।।
प्रभु भक्ति से प्रभु सिमरन से।
मेरा रिश्ता नाता तोड़े।।

माया न जाए मन से, भक्ति न आए मन में।
जीवन न जाए बेकार, कैसे लगेगी नैया पार।।

क्षमा करो मेरे प्रभुवर स्वामी।
चंचलता मन की लाचारी।।
लगन जगा दो मन में स्वामी।
तुम हो प्रभु जी अर्न्तयामी।।

मन न बने अनुरागी, भावना बने न त्यागी।
दया करो करतार, हो कैसे लगेगी नैया पार।।

रहिमन चुप हो बैठिये, देख दिनन के फेर।
जब नीके दिन आयेंगे, बनत न लागे देर।।

दुख भी मुझे प्यारे हैं

तर्ज : संसार है एक नदिया

सुख भी मुझे प्यारे हैं, दुख भी मुझे प्यारे हैं।
छोड़ूं मैं किसे भगवन, दोनों ही तुम्हारे हैं।

सुख–दुख ही दुनिया की, गाड़ी को चलाते हैं।
सुख–दुख की हम सबको, इंसान बनाते हैं।
संसार की नदिया के, दोनो ही किनारे हैं।।

दुख चाहे न कोई भी, सब सुख को तरसते हैं।
दुख में सब रोते हैं, सुख में सब हंसते हैं।
सुख मिले उसके पीछे, दुख ही तो सहारे हैं।।

सुख में तेरा शुक्र करूं दुख में फरियाद करूं।
जिस हाल में रखे मुझे, मैं तुमको याद करूं।
मैंने तो तेरे आगे, ये हाथ पसारे हैं।।

जो है तेरी रज़ा उसमें, देखूं मैं पकड़ कैसे।
मैं कैसे कहूं मेरे, कर्मो के हैं फल कैसे।
चख कर भी न देखूंगा, मीठे है कि खारे हैं।।

दुख की धूप कभी सर पर है, कभी तो है सुख की छाया
बदल बदल कर समय सभी पर बारी बारी आया।।

क्यों दूर है इस भक्ति से

तर्ज : ये बन्धन तो प्यार का बन्धन है।

क्यों दूर है इस भक्ति से, प्रभु भक्ति की शक्ति से,
मग़रूर क्यों है मस्ती से, पूछो कुछ इस हस्ती से।
जीवन तो एक दिन जाना है, लौट के नहीं आना है।।

इस मन मन्दिर में वो है उनकी प्यारी मूरत।
जहां भी देखूं वही दिखे उनकी प्यारी सूरत।।
तू कर्महीन क्यों होया, क्यों व्यर्थ की बात में खोया।।
दुनिया जागी तू सोया, जब आंख खुली तो रोया।। जीवन तो...

गुज़रान यहां कुछ दिन की, दुनिया एक सराए।
जग दो दिन का मेला, कोई आए कोई जाए।।
जो चाहो गर कुछ पाना, उस प्रभु का ध्यान लगाना।
जीवन चाहो तर जाना, प्रभु के चरणों में आना।। जीवन तो...

सुन वेदों में बहती है, इक अमृत की धारा।
जिसने पिया ये अमृत, उसने जनम संवारा।।
वो ही तो है महादानी, सब उनकी मेहरबानी।
अब भी छोड़ो नादानी, सुन वेद की अमृत वाणी।। जीवन तो...

रचना :– कंचन कुमार

जो बन्दा खुदी से जुदा हो गया।
खुदा की कसम वो खुदा हो गया।।

सांसो का क्या भरोसा

तर्ज : रहा गर्दिशों में हर दम..

सांसो का क्या भरोसा रुक जाए कब कहाँ पर।

मत हँस कभी किसे पे न सता कभी किसी को।
न जाने कल को तेरा क्या हाल हो यहाँ पर।।

जो हँस जैसा जीवन चाहता है ए बशर तूं।
चुन ले गुणों के मोती बिखरे जहाँ–जहाँ पर।।

कर कर्म इतना ऊँचा कि बुलन्दियों को छू ले।
इज्जत से नाम तेरा आ जाए हर जुबाँ पर।।

जो बन्दा खुदी से जुदा हो गया।
खुदा की कसम वो खुदा हो गया।।

सदियों से जीव भटकता

सदियों से जीव भटकता पर चैन कभी न पाया।
सौ बार मरा जी जीकर फिर भी जीना न आया।।

पशुओं वृक्षों में घूमा, पर पर उपकार न सीखा।
नया पाप करने की खातिर सीखा नित नया तरीका।
पशु पुरूष में क्या अंतर यह ज्ञान अभी न आया।।

तह करके ताक पे रख दी, जीवन की सभी किताबें।
या खून पिया निर्धन का या विषयों की जहर शराबें।
प्रभु नाम के अमृत रस का इक जाम न पीना आया।।

निर्धन गरीब तड़पा भी, पर तेरी दया पिघली ना।
पत्थर बन गया कलेजा, सीमेंट बन गया सीना।
सीने से सी ना निकली, एक ज़ख्म न सीना आया।।

कभी मोर पपीहा बनकर, पीपी ना कभी पुकारा।
सत्संग की वर्षा ऋतु में, मन धोकर नहीं निखारा।
कई बार तेरे जीवन में, सावन का महीना आया।।

इस चौरासी के चक्कर ने, तुझे यूं चक्कर में डाला।
इस जीवन तख्ती पर, कई बार सवाल निकाला।
हर बार गलत ही निकला, इक बार सही न आया।।

तेरे कर्मो का लेखा जोखा, जब प्रभु ने देखा भला।
नत्थासिंह सर से पैरों तक, तेरा जीवन निकला काला।
सब पुण्य पड़ गये फीके, पापों का पसीना आया।।

वैराग्य दोहे

हाड़ जले ज्यूं लकड़ी
केश जले ज्यूं घास
सब जग जलता देख के
भये कबीर उदास

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रौदें मोय
एक दिन ऐसा आयेगा मैं रौदूंगी तोय

पत्ता टूटा डाल से,
ले गई पवन उड़ाय
अब के बिछड़े कब मिले
दूर पड़ेंगे जाय

आए हैं सो जायेंगे राजा रंक फकीर
एक सिंहासन चढ़ि चले एक बंधे जंजीर

चलती चक्की देख के
दिया कबीरा रोय
दो पाटन के बीच में
साबुत बचा न कोय

निर्बल को न सताइए जाकी मोटी हाय
बिना जीव की खाल से लोह भस्म हो जाय

मन की मशीनरी ने तब ठीक चलना सीखा।
जब बूढ़े तन के हर एक पुर्जे पर जंग आया।

आयु ने 'नत्थासिंह' जब हथियार फैंक डाले।
यमराज फौज ले के करने को जंग आया।।

सच्चा साथी।
रोगी होने पर जो साथ हो
दुखी होने पर जो साथ हो
अकाल पड़ने पर जो साथ दे
शत्रु से संकट में जो साथ दे
मुकदमें में फंसने पर गवाही दे
और मृत्यु होने पर जो शमशान में साथ दे
वही सच्चा बन्धु है।

गज़ल

दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है।
मिल जाए तो मिट्टी है खो जाए तो सोना है।।

रोते हुए आए थे हँसते हुए जाना तुम।
हर वक्त का रोना तो बेकार का रोना है।।

संसार की हर शय में ऐसी ही रवानी है।
आया जो यहाँ प्यारे एक दिन उसे जाना है।।

क्या करना है माया का जोड़ी जो करोड़ों में।
आकाश तेरी छत है धरती ये बिछौना है।।

ये हकीकत तू समझ लेना नश्वर तेरी काया है।
समझा है जिसे कंचन मिट्टी का खिलौना है।।

इस तरह से न कमाना कि पाप आए
इस तरह से न खर्च करना कि कर्ज आए
इस तरह से न खाना कि मर्ज आए
इस तरह से मत चलना कि देर हो जाए।

साथ ले लो पिता

साथ ले लो पिता, आगे बढ़ जाऊँगा।
वरना सम्भव है मैं भी फिसल जाऊँगा।।

राहे चिकनी खड़ी और पथरीली हैं
कांटो झाड़ी भरी और जहरीली है
दो सहारा कि इनमें मैं फँस जाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

भोग विषयों की उठती है इक इक लहर
मुझ को उलझा डुबाने चली हर प्रहर
दे दो पतवार वरना न तन पाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

दुनिया इस ओर कहती है आ मौज ले
पर उधर धर्म कहता है दुःख मोल ले
तुम कहोगे मुझे जैसा कर पाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

सत्य कहता हूँ भूला जभी मैं तुम्हें
पायी दुनिया मगर एक न पाया तुम्हें
बिन तुम्हारे मैं आखिर किधर जाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

जप ले तू प्रभु का

तर्ज : सौ बार जनम लेंगे...

जप ले तू प्रभु का नाम पूरण हो जायेंगे काम।
जीवन का भरोसा क्या कुछ सोच अरे नादान।।

पंछी है तू अलबेला उड़ता है बहारों में
तुझे होश खिजा का नहीं खुश रहे तू नजारों में।
उड़ जाएगा तूं एक दिन सब छोड़ के ऐशो आराम।।

है स्वार्थों की ये दुनिया यहाँ कोई नहीं अपना।
ये महल में धन दौलत हसरत भरा एक सपना।
इक मौत की करवट से मिट जाएगा नामों निशान।।

क्यों भटक रहा राही मंजिल के ठिकाने को।
संकोच न कर मनहर हरिनाम है गाने को।
हरि नाम ही जीवन को पहुंचायेगा मुक्ति धाम।।

खाली पिंजरा

खाली पिंजरा पड़ा रह जाएगा।
जब हँसा अकेला उड़ जायेगा।।

छूटेगी सम्पत्ती खजाने की सारी।
भाई बहन और पिता पुत्र नारी।
संग प्रेमी नहीं कोई जायेगी।। जब हंसा ...

माटी के पुतले को क्यों तू सजाए।
मल—मल के साबुन और तेल लगाए।
एक पल में बिखर कब जाएगा।। जब हंसा ...

एक दिन तूझे जग से जाना पड़ेगा।
कर्मो की गठरी उठाना पड़ेगा।
फिर समझ—समझ पछताएगा।। जब हंसा ...

बुराईयों को कभी जीवन में अपनाना नहीं चाहिए।
यह मीठा जहर होता है इसे खाना नहीं चाहिए।
बुरी संगत जहां देखो वहां जाने से शरमाओ,
कहीं सत्संग होता हो तो शरमाना नहीं चाहिए।
कोई कितना भी क्यों न हो बड़े घरबार, धन वाला,
जहां स्वागत नहीं होता वहां जाना नहीं चाहिए।

सब लोगों का खाता

मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता।
जैसा कोई कर्म करेगा, वैसा ही फल पाता। टेर
क्या साधु क्या सन्त गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी।
प्रभु की पुस्तक में लिखी, सबकी कर्म कहानी।
बड़े–बड़े वो जमा खर्च का, सही हिसाब लगाता।1।।
नहीं चले उसके घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी।
उसके अने लेन–देन की, रीति बड़ी है बाँकी।
पुण्य का बेड़ा पार करे, और पाप की नाव डुबोता।2।।
करता वहीं हिसाब सभी का, एक आसन पर डटके।
उसका फैसला कभी न पलटे, लाख कोई सर पटके।
समझदार तो खुर रहता, और मूरख शोर मचाता।3।।
अच्छी करनी करियो रे लाला, कर्म न करियो काला।
लाख आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला।
अच्छी करनी करे चतुर नर, समय गुजरता जाता।4।।
ओ3म् नात तू लपले, 'केवल' जीवन सफल बना ले।
वेद ज्ञान की पावन गंगा, नित उठ मन को धो ले।
ऋषि–मुनि और ज्ञानी–ध्यानी, भवसागर तर जाता।4।।
मेरे प्रभुजी के दरबार में, सब लोगों का खाता।
जैसा कोई कर्म करेगा, वैसा ही फल पाता।।

धीरे–धीरे घटती जाये

तर्ज : नगरी–नगरी द्वारे द्वारे

धीरे–धीरे घटती जावे, सारी रे उमरिया।
दुनिया के मेले में लुट गई, जीवन की गठरिया।।टेर।।

साथी नहीं किसी का कोई, झूठे सपने प्यार के।
माया के सब तोड़ के बन्धन, होजा भव से पार रे।।
चलता–चलता जा पहुंचेगा, प्रभुजी की नगरिया।1।।

झूठे गर्व में मदमाता है, माटी में मिल जायेगा।
हीरा जन्म है यह तेरा, फिर पीछे पछतायेगा।।
पल–पल जीवन बीता जाता, कल की क्या खबरिया।2।।

ढूँढ रहा तू जिसको प्यारे, भीतर है भगवार रे।
मुक्ति तेरे द्वार खड़ी है, क्यों भूला नादान रे।।
पग–पग पगले ठोकर खाये, पाई ना डगरिया।3।।

धीरे–धीरे घटती जावे, सारी रे उमरिया।
दुनियाँ के मेले में लुट गई, जीवन की गठरिया।।

नाम प्रभु का

तर्ज : फूल तुम्हें भेजा है बन्दे

नाम प्रभु का गाले बन्दे दो दिन की जिन्दगानी है
जीवन तो झरना है तेरा भक्ति उसका पानी है।।

तोड़ के सारे बन्धन अपने सत्संग में तुम आ जाओ।
परमानन्द मिलेगा तुझको डुबकी जरा लगा जाओ।
भजते–भजते नाम प्रभु का तर गए लाखों प्राणी है।।

माना घर की जिम्मेदारी सबको आज निभायी है।
ये भी अपना फर्ज है प्यारे वेदों ने भी बखानी है।
ऐसे रहे हम जैसे रहता कमला पात पर पानी है।।

मेरे तेरी करते–करते मन अपना कंगाल हुआ।
क्या लेकर धरती से आया यम पूछेगा सवाल वहाँ।
लाख चौरासी भटक भटक कर मानुष काया पानी है।।

सम्हले अगर व पछताऐंगे जब चिड़िया चुग जाएगी।
यहाँ की दौलत यहीं रहेगी तेरे साथ न जाएगी।
प्रभु नाम की सच्ची दौलत साथ तेरे ही जानी है।।

मौत ठहर

मौत ठहर जरा चार दिन हस्स लैन दे नी,
होर माया दे जंजाल विच फस्स लैन दे नी।।
अजे तां मैं पौत्रे नूं परनौणा ए,
दोहतरी नूँ वी अजे डोली विच पौणा ए।
होर मोह दीयां जन्जीरां जरा कस लैन दे नी।
फरनीचर इह मैं बाहरों मंगाया ए,
नवां इह मकान जो मैं हुणे ई बनाया ए।
कुछ तां उहदे विच सुखां नाल वस्स लैन दी नी।
पाप दी कमाई जो मैं धर्ती च गडी ए,
अजे ते ओहदी मैं हवाड़ नहीं कढ़ी ए।
नी उनहों वेख अखं छमां छम वस्स लैन दे नी।
हफता जे होर मैंनू दे देवें उधारा,
गया प्रदेश मेरी अखीयां दा तारा।
नी उसनूं सद के ते कारोबार दस लैण दे नी।।
नब्बे साल वी नहीं जी के मैं रज्जया,
जुड गया जोड़ जोड़ दन्द दन्द भजया।
बाकी रह गया जुबाड़ा इह वी धस लैन दे नी।
खुर गई जवानी मेरा जोबन बैह गया,
की होया जे मैंनूं दिसनों वी रह गया।
नी अखों होर जरा अन्दर नूं धस लैन दे नी।
उमर बुढ़ापे च वी चाहन्दा ही बितानी,
शकल मेरी वी ऐनी बन जाये डरानी।
कि मैथों डर के जनाणियां नूं नस लैण दे नी।
नत्थासिंह हुण क्यों पछतांदा ए,
जीवन भर रिहा मालशां करादा एं।
ते जरा यमां नू वी तलीयां हुण झस्स लैनदे नी।

तर जायेंगे

तर्ज : ले जायेंगे ले जायेंगे....

तर जायेंगे, तर जायेंगे, ओउम, नाम जपन वाले तर जायेंगे।
रह जायेंगे, रह जायेंगे, मोह माया के लोभी रह जायेंगे।

आया किस लिये था, विचार कर ले, विचार कर ले,
पड़ा मझधार बेड़ा, पार कर ले, बेड़ा पार कर ले।
जग है लुटेरा तुझे विषयों ने घेरा,
अब अन्त समय को तज जायेंगे। तर जायेंगे ....

किस लिये करता है मान बन्दया, मान बन्दया,
पल दो पल की है शान बन्दया, शान बन्दया,
फिर है अंधेरा, नहीं आयेगा सबेरा,
चल दर्श प्रभु दा पा आयेंगे। तर जायेंगे...

छोड़ झगड़े प्राणी, प्यार कर ले, प्यार कर ले,
अपने जन्म का सुधार कर ले, सुधार कर ले।
कोई नहीं तेरा, यहां योगी वाला फेरा,
चल जीवन सफल बना आयेंगे। तर जायेंगे ....

कभी कोई आये

तर्ज : सारी–2 रात तेरी याद....

कभी कोई आये यहाँ कभी कोई जाये।
जीव है मुसाफिर यह जग है सराय रे दिल क्यों लगाये।
जिसने भी आके यहां झण्डे हैं गाढ़े,
उसके ही मौत ने यों पाँव उखाड़े।
कि नामों निशान तक भी नजर न आये रे। दिल क्यों

इतनी है प्यारे तेरी जीवन कहानी,
बचपन सवेरा है दोपहर है जवानी।
शाम है बुढ़ापा मानों ढलते हैं साये रे दिल क्यों लगाये।
कभी ....

दादा का मकान बना पोता निगाहबान है,
यह भी विचारा चन्द रोज का मेहमान है।
पोते का भी पोता आके मालिक कहाये रे, जग है सराये।
कभी ...

उनके ही नाम आज दुनिया में छाये हैं,
नेकी के महल जिन लोगों ने बनाये हैं।
'नत्थासिंह' उनके ही जहान गुण गाये रे। दिल क्यों ...
कभी कोई आये यहां कभी को जाये।

कर दो प्रभु

तर्ज – पर्वतों के पेड़ों पर

कर दो प्रभु, मेरे मन में अंधेरा है।
जब से तेरी लगन लगी, हुआ मन पे सवेरा है।

उसको हटा दो प्रभु, मन में जो पर्दा पड़ा।
कोई नहीं अपना यहां, एक आसरा तेरा है।

इतना बता दो प्रभु, मेरी मंजिल है कहां।
मुझे ले चलो वहां, जहां सन्तों का डेरा है।

तेरे दर्शन के बिना, लाखों युग बीत गए।
आन मिलो प्रभु जी, पाऊँ प्यार जो तेरा।।

मन भूल मत जईयो, ओ3म् नाम की शरण।
ओ3म् नाम की शरण, सुख–धाम की शरण।।

ओरे मत मतवारे, छोड़ दुनिया के द्वारे।
ओ3म् नाम के सहारे, काट जीवन मरण।।

सब संतों ने बखानी, उसकी महिमा रसखानी।
मिले दात मनमानी, कोई आए जो शरण।।

दो गज़ कफन का टुकड़ा

जायेगा जब यहां से, कुछ भी न पास होगा।
दो गज कफन का टुकड़ा, तेरा लिबास होगा।

कांधे पे धर ले जायें, परिवार वाले तेरे।
यमदूत ले पकड़कर, डोलेंगे घेरे–घेरे।
पीटेगा छाती अपनी, कुनबा उदास होगा।। दो गज ...

चुन–चुन के लकड़ियों में, रख दें तेरे बदन को।
आकर के झट उठा लें, मेहतर तेरे कफन को।
दे देगा आग तुझमें, बेटा जो खास होगा।। दो गज...

मिट्टी में मिले मिट्टी, बाकी खाक होगी।
सोने से तेरी काया, जल कर के राख होगी।
दुनिया को त्याग तेरा, मरघट निवास होगा।। दो गज...

हरि का जो नाम जपते, भव सिन्धु पार होते।
माया मोह में फंसकर, जीवन अमोल खोते।
प्रभु का नाम जप ले, बेड़ा जो पार होगा।। दो गज...